

32, 174, 191, 402, 63, 60, 243. BHĀG. P. 3, 4, 26.

मर्त्येयित (मर्त्य + इ०) adj. von Menschen gesandt RV. 4, 39, 8.

मर्द्, मर्द्दति (तोदे) DHĀTUP. 31, 43. मर्दति NAIGH. 2, 14 (गतिकर्मन्). 19 (वधकर्मन्). MBh. 3, 4639 u. s. w. मर्दते 13, 3310. अभिमर्दताम् HARIV. 3019. पर्यमर्दत MBh. 3, 556. ममर्द, ममर्दुस् und ममर्दस्, ममर्दे (MBh. 2, 2937. 4, 467, 8, 692); अभिमर्दति: मर्दित्वा P. 1, 2, 7. VOP. 26, 204. मर्दितुम्: pass. मृद्यते, मर्दित. 1) *heftig drücken, — andrücken; zerdrücken, zerstampfen, hart mitnehmen, aufreiben, verwüsten*: वत्तस्यानीय वेगेन ममर्देन विचेतसम् MBh. 4, 768. तस्योरसि मुहुःखार्ता मर्दितक्लिन्नलोचना: HARIV. 3693. तां च द्रव्यसि गोविन्द पुत्रैर्मर्दितस्तनीम् 4393. भार्या परेण मर्दिताम् (beim Beischlaf) 11247. सुरतमर्दिता बालवनिता Spr. 2087. अग्रतस्ते गोमिष्यामि मर्दतो कुशकण्टकान् R. 2, 27, 7. यो नडुलानीव गजः परेया बलान्यमर्दात् RAGH. 18, 4. पाया गुणोन्नतम् । मर्दति कण्टकान्प्राप्तुं कर्मा इव केतकम् ॥ Spr. 1204. पर्वताग्राणि MBh. 3, 12378. (दत्तिनः) मर्दतः स्वान्यनीकानि 6, 4705. अपि पञ्चशतं शूरा मर्दन्ति (मर्दति ed. Calc.) मर्दतो चमम् 151 (Spr. 3272). (अस्त्रेण) तेनास्त्राद्यतुरो ऽमर्दात् 1, 4120. अभित्रान् 3, 1349. 3, 4639. 13, 3310. BHĀT. 13, 35. रथान्सार्थिभिः सार्धं कृत्यैव ममर्द च HARIV. 9333. वन्या गजवरास्तत्र ममर्दमनुज्ञान्वहन् MBh. 1, 2844. (नागाः) ते तं ममर्दुः 3, 2542. ममर्दुस्तस्य नगरम् 1, 5448. 8, 692. लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् R. 6, 2, 32. महानप्येकको वृत्तः — शक्या वातेन सस्कन्धो मर्दितुं तणात् Spr. 2149. ये — तस्मैश्चापि मृद्यते MBh. 12, 717. भूतैर्भूतानि मृद्यते अमर्तो मृद्यते कथम् MĀRK. P. 26, 22. मर्दितं AV. 11, 10, 26. रथं zerbrochen CAT. Br. 12, 3, 4. 5. कमलस्रजः zerdrückt R. 2, 94, 24. त्रीहि zerrieben JĀGĀ. 2, 107. कृत्स्नपृथेन zertreten u. s. w. MBh. 3, 2570. 17326. HARIV. 9934. मर्दितासुर KATHĀS. 37, 44. पुरं ते मर्दितं मया verwüstet MBh. 1, 5504. — 2) *reiben*: यत्स पुष्पाण्युपादाय कृस्ताभ्यां ममर्दे शनैः MBh. 2, 2937. fg. नेत्रम् SUÇR. 2, 359, 3. 318, 3. मन्माषयवगोधूमगोमयमर्दितायां लचि 1, 97, 16. मर्दितपल्लवरत्नकाङ्ग (वायु) sich reibend an Çiç. 4, 61. कृस्तेन ममर्दे चैव ललाटम् er rieb sich den Schweiß von der Stirn MBh. 4, 467. sich reiben an in der Astr. so v. a. ein Sternbild berühren, durch ein Sternbild durchgehen VARĀH. BRH. S. 7, 2. मर्दित्वेन्द्रगोचरम् sich gleichsam reibend an so v. a. wetteifernd BHĀT. 7, 95. — 3) *wegreiben, abwischen, vernichten*: कपोले पत्राली कर्तलनिरोधेन मर्दिता Spr. 397. मर्दितकपाय KĪND. UP. 7, 26, 2. BHĀG. P. 5, 7, 6. श्वेतिर्मर्दति देहिनाम् SUÇR. 1, 261, 13. — मृद्यति KĀTJ. ÇR. 22, 3, 45 und मर्दति beim Schol. zu ÇĀKH. ÇR. 14, 40, 14 fehlerhaft für मर्दति; मर्दमानाः MBh. 6, 4701 fehlerhaft für मर्दतश्च (so die ed. Bomb.); मर्दन् 14, 228 fehlerhaft für नर्दन् (so die ed. Bomb.).

— caus. मर्दयति 1) *stark drücken; zerdrücken, zerbrechen, zerstampfen, bedrängen, aufreiben, hart mitnehmen, quälen, plagen*: परिज्ञैर्मर्द्यमानोदरः — ववाम तत् KATHĀS. 54, 184. मर्दयामास तोरणम् R. 1, 1, 72. अमीमर्दतसर्वथा ते ऽद्य कपो ह्यस्त्रैस्त्रम् MBh. 8, 4566. लाङ्गलकृस्ताभ्यां चरणाभ्यां च मर्दिता । बभूवाशोकवनिका ॥ R. 5, 16, 22. एष पार्था मर्दारज मर्दयेत्समकाचम्: MBh. 7, 7657. सिंहुव्याघ्रमृगोश्चैव मर्दयानः 3, 11106. गाङ्गेयं मर्दयत्तं शिते: (so die ed. Bomb.) शिरे: 6, 3888. KĀM. NĪTIS. 18, 61. मर्दारगाः समुत्पेतुर्दन्द्भूताः सवृश्चिकाः । सिंहुव्याघ्रवराकाश्च मर्दयतो मर्दागजान् ॥ BHĀG. P. 8, 10, 46. वचोभिः परुषैरिन्द्रं मर्दयतो ऽस्य मर्मसु 11, 20. स पूर्वमतिविद्वद्भ्यं पश्चात्सुमर्दितः (पश्चाच्च पीडितः ed.

Bomb.) MBh. 7, 9328. मर्दिताश्चासुरैः सुराः 13, 804. — 2) *reiben*: मर्दयत्यस्तत्प्रत्यङ्गम् KATHĀS. 4, 54. स्तनान् TBh. Comm. 2, 402, 7. स्वेदितो मर्दितश्चैव रज्जुभिः परिवेष्टितः । मुक्ता द्वादशभिर्वर्षैः अपुच्छः प्रकृतिं गतः ॥ Spr. 3342. — 3) *zerstampfen lassen* Schol. zu KĀTJ. ÇR. 1000, 1. — 4) मर्दित (ein verlesenes संदित) = ग्रन्थित BHAR. zu AK. 3, 2, 35. ÇKDR. — desid. zu zerdrücken —, zu zermalmen im Sinne haben: मिमर्दिपतः MBh. 8, 882.

— intens. zermalmen: स्वा तं मर्मर्तु (nach SĀJ. von 1. मर्) डुच्छुना कर्स्वतो RV. 2, 23, 6. — Die Form अमरीमृत्स्यत ÇAT. Br. 4, 3, 1, 10 ist eine falsche Bildung und etwa aus अमरीमृत्सत oder अमरीमृशत entsteht.

— अति caus. *hart bedrängen, — mitnehmen*: एते द्रवन्ति स्म रथाश्चनागाः पदतिसंधानतिमर्दयतः MBh. 8, 3846.

— अय स. अयमर्द.

— अभि zerstampfen, zertreten, zerbrechen, zerstören, aufreiben, hart mitnehmen: शार्ङ्गलस्य गुह्यं धूण्या नीचः कोष्ठाभिमर्दति Spr. 1998. उत्तरनगरद्वारमेते — आरुह्य चाभिमर्दताम् HARIV. 3019. अन्योऽन्यमभिमर्दति नगराणि (sc. कृत्रिमाणि Schol.) युयुत्सवः (शिखवः) MBh. 6, 77. न शक्या यज्ञमध्यस्था वेदी — चाण्डालेनाभिमर्दितुम् R. 3, 62, 24. HARIV. 3312 (अवमर्दितुम् die neuere Ausg.). अन्योऽन्यमभिमर्दतः स्पर्धमानाः परस्परम् MBh. 6, 2738. in der Astr. so v. a. bekämpfen, in Opposition treten VARĀH. BRH. S. 7, 7. — Vgl. अभिमर्द fgg.

— अय 1) dass.: दत्तिणं नगरद्वारमवामर्दात् MBh. 3, 16346. दिव्यैर्ह्यैरवमर्दवैद्यवान् 3, 1848. तुरगान्वाजाः । स्वपदैरवमर्दति 6, 1780. 1783. 14, 228. अवमर्दन्स राष्ट्रार्णि पार्थिवानां ह्येतत्तमः 2134. HARIV. 9121. गिरिः सानूनि — वार्ष्णेयमृद्यते मामकैः R. 2, 93, 8 (102, 10 GORR.). HARIV. 3312 (अभिमर्दितुम् st. अव० ed. Calc.). तांश्च (शत्रून्) सर्वानवामर्दाद्रामः MBh. 3, 10203. — 2) *reiben*: अवमर्दाद्दङ्कुष्ठमङ्कुष्ठेन MBh. 4, 468. — अवमर्दतः MBh. 7, 1831 fehlerhaft für अपि मज्जतः, wie die ed. Bomb. liest. Vgl. अवमर्द fgg. — caus. zerbrechen, zerstören: सो ऽयं प्रूलो ऽवमर्दितः R. 6, 93, 38. द्वारका चावमर्दिता MBh. 3, 874. अवमर्दितचित्तम् (so ist zu lesen) SADDH. P. 4, 24, 6 übersetzt BURNOUF durch dont l'esprit est suffisamment fait.

— आ zerreiben: केशरस्य च पुष्पाणि कोरणामृद्य R. 2, 96, 20 (105, 19 GORR.). zerreiben so v. a. mengen SUÇR. 1, 161, 16. — Vgl. आमर्द fg.

— अभ्या स. अभ्यामर्द.

— व्या einreiben: शचीव्यामर्दितानुलेपने — पुरंदोरसि HARIV. 7210 = 7294.

— उड् einreiben: सर्वसुरभ्युन्मर्दित KĀTJ. ÇR. 19, 4, 14. zerreiben, mengen: दध्नेन्मृद्य 10, 9, 31. med. sich abreiben: उन्मर्दति LĀTJ. 9, 2, 18. Vgl. उन्मर्दन. — caus. reiben, frottieren: स्वेदितोन्मर्दित SUÇR. 1, 37, 20.

— उप 1) in der Astr. sich reiben an so v. a. durchgehen: आश्विनवारुणमूलान्युपमृदनेवती च चन्द्रसुतः VARĀH. BRH. S. 7, 6. — 2) bei Seite schaffen, vernichten: पामिकाननुपमृद्य NAISH. 3, 110. अनुपमृद्य मृत्पिण्डादिकम् ÇĀKH. zu BRH. ĀR. UP. S. 29. मर्दादिकारणं नोपमृद्यते 30. — Vgl. उपमर्द fg. — caus. zerstören, verwüsten: (पुरी) कालकन्यापमर्दिता BHĀG. P. 4, 28, 10. bei Seite schaffen, vernichten, aufheben: परिभाषामुपमर्द्य Schol. zu RV. PRĀT. 6, 4. ÇĀKH. zu BRH. ĀR. UP. S. 78. उपमर्दितव ÇĀKH. zu KĀND. UP. S. 6.

— नि 1) zermalmen, zerbrechen: कूबरं न्यमृणात् KĀTJ. 10, 5 in Ind.